

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पर्यावरण संरक्षण: मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका

डा.कल्पना गवली *

पर्यावरण क्या है ?

‘पर्यावरण’ दो शब्दों ‘परि’ और ‘आवरण’ से बना है, जिसका अर्थ है चारों ओर का। हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएं, परिस्थितियां या शक्तियां विद्यमान हैं, वे मानवीय क्रिया कलापों को प्रभावित कराती हैं और उसके लिए दायरा सुनिश्चित कराती हैं। इसी दायरे को पर्यावरण कहते हैं। अंग्रेजी ‘Environment’ का उद्भव फ्रांसिसी भाषा के ‘इनाविरोनियर’ शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है – घेरना। Environment शब्द ‘हैबिटेट’ है, जो लैटिन भाषा के ‘हैबितायर’ शब्द से निकला है। ‘हैबिटेट’ शब्द पर्यावरण के सभी घटकों को स्थानीय रूप से लागू करता है। इसका प्रभाव आवास स्थल तक सीमित है। जबकि ‘इनवायर्नमेंट’ शब्द ‘हैबिटेट’ की तुलना में अधिक व्यापक है।

पर्यावरण के अंतर्गत जीव जंतु वनस्पति, वायु, जल, प्रकाश, ताप, मिट्टी, नदी, पहाड़ आदि सभी अजैविक तथा जैविक घटकों का समावेश है। इसमें वह सब कुछ समाविष्ट है, जो पृथ्वी पर अदृश्य एवं द्रश्य रूप में विद्यमान है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम १९८६ में पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा गया है- “पर्यावरण में एक और पानी, वायु तथा भूमि और उनके मध्य अंतःसंबंध विद्यमान हैं और दूसरी और मानवीय प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु एवं सम्पत्ति सम्मिलित हैं।” पर्यावरण के संरक्षण की जानकारी 321 और 300ईसा पूर्व के मध्य से देखी जा सकती है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में उसका वर्णन भी किया था।

पर्यावरण के विषय का ज्ञान, महत्व एवं उद्देश्य –

१. लोगों के जीवन में प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण कितना महत्वपूर्ण है।
२. भागदौड़ भरी जिंदगी में पर्यावरण को कितना महत्व दे पाते हैं?
३. पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की क्या भूमिका हो सकती है? उसका योगदान क्या है?
४. भूमंडल का तापमान वृद्धि का प्रभाव और जानकारी देना।
५. राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान
६. इको क्लब को बढ़ावा देना

हमारी धरती कितनी सुन्दर है, हमें साँस लेने के लिए ताज़ी हवा, खाने के लिए अन्न पीने के लिए शुद्ध पानी देती है, लेकिन हम उसका संरक्षण करने के बदले उसका बिगाड़ ही करते रहते हैं।

मीडिया की भूमिका—

ग्लोबल विलेज में तरक्की करने वाला आज का युग जिसे हम सूचना युग भी कहते हैं। ऐसे में मीडिया राजनीति, सामाजिक, क्राइम, फैशन, पेज ३ या रंगीन दुनिया को ही दिखायेगा तो काम चलने वाला नहीं है, आज मीडिया जिसे हम संचार का माध्यम कहते हैं। जो सेंकडो में नारद मुनि की तरह कोई भी खबर को लोगों को तरह-तरह के मुश्किलों से सावधान करता है। वे पर्यावरण की तरह बिलकुल ध्यान नहीं दे रहे। ऐसे समय में मीडिया अपनी भूमिका निभा सकता है।

*डा.कल्पना गवली, एसोसियेट प्रोफेसर हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय बड़ौदा

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

मीडिया से अपेक्षा की जाती है की वे वैश्विक क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर होनेवाली पर्यावरण घटनाओं, समाचारों और सूचनाओं को जनसामान्य तक इस ढंग से पहुंचाएं की वे तथ्यों का सही विश्लेषण कर अपनी राय बना सकते है. मीडिया का लक्ष्य यह भी होना चाहिए कि पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से व्यक्ति ज्ञान, विवेक, व्यावहारिक, ज्ञान, कौशल प्रदान करना होना चाहिए.

प्रिंट मीडिया की भूमिका-

मुद्रित माध्यम पर्यावरणीय जनसंचार का एक सशक्त और व्यापक माध्यम है. भारत में 19 प्रमुख भाषाओं सहित 100से अधिक भाषाओं और बोलियों में समाचार पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है. लोकतान्त्रिक व्यवस्था के अनुरूप सर्वाधिक जीवंत माध्यम है. पर्यावरणीय सूचना प्रसारण पर्यावरण संरक्षण हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण, पर्यावरणीय समाचारों, कार्यक्रम, लेखों, फीचरों, साक्षात्कारों का प्रकाशन जन मत निर्माण करने में सहायक सिद्ध होती है. पोस्टरों और चित्रों के माध्यम से पर्यावरण बचाओ पर्यावरण के प्रति प्रेम पेड़ लगाओ पर्यावरण और प्रदूषण आदि से सम्बंधित किन्तु प्रभाव शाली संदेशों को जनजागृति के लिए जन सामान्य तक पहुंचा सकते हैं.

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका -

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन फिल्म, मल्टीमीडिया और ऑडियो - विडियो स्लाइड, निओन साईन आते है.

रेडियो के माध्यम से शिक्षा सूचना और मनोरंजन संप्रेषित होता है. इस माध्यम से सामान्य जन तक पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण, शिक्षा, वन्य जीव सुरक्षा एवं संरक्षण, पेड़ लगाओ, अभियान, कार्यक्रमों से संबंधित जानकारी आसानी से भेजी जा सकती है. हरित क्रान्ति को आगे बढ़ाने में रेडियो प्रसारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है.

दूरदर्शन का भारत में १५ सितम्बर १९५९ को शैक्षणिक उद्देश्यों के साथ आरंभ हुआ. ग्लोबल वार्मिंग

आज एक चुनौती के रूप में मनुष्य के सम्मुख कड़ी है. इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मीडिया आम जन में जागरूकता पैदा करने का प्रयास कर रहा है. मीडिया ने हिन्दुओं के एक पवित्र धाम श्री बद्रीनाथ जी के मंदिर स्थल का कवरेज टीवी चैनल पर दिखाकर तथा समाचार पत्रों में रिपोर्ट प्रकाशित करके इसी दिशा में एक पहल की है इसमें दिखाया और बताया गया है की यदि पर्यावरण के प्रति हम समय रहते नहीं चेते तो हो सकता है की श्री बद्रीनाथ धाम अपना अस्तित्व ही खो दें. भूटान में हुए भूकंप का प्रसारण भी देखा हमने, उसके बाद रिसर्च टीम ने बार -बार आपने वाली आपदा का कारण कई बार जनता के सामने रखे और पर्यावरण बचाओ बुलेटिन से जनता को सन्देश भी दिया है. हिमालय में होने वाले बदलाव से भी पृथ्वी को खतरे की जानकारी दूरदर्शन के माध्यम से दी का रही है.

फिल्मों की भूमिका भी हो सकती है फिल्मों के माध्यम से डॉक्युमेंट्री एवं फीचर फ़िल्में भी बने जाती है. इंटरनेट के उपयोगकर्ता की संख्या आज बढ़ गई. सूचना प्रौद्योगिकी का नया क्षेत्र मल्टीमीडिया है. इसमें लेखन सामग्री, ध्वनि, वीडियो, द्विआयामी या विआयामी ग्राफिक्स और एनीमेशन शामिल है. स्कूल के बच्चों को छोटी- छोटी फिल्मों से जाग्रति ला सकते है.

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

परंपरागत माध्यमों की भूमिका –

भारत आज भी गाँवों में बसा हुआ है. लोक माध्यमों से संस्कृति ही नहीं बल्कि विशेष सन्देश को भी समाज के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है. लोक गीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य, कठपुतली आदि लोक माध्यमों से भी पर्यावरण का ज्ञान दे सकते हैं.

मीडिया ने हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए इसके माध्यम से की गई बातें समाज में बदलाव के लिए अच्छा कार्य कर सकते हैं. जितना तेजी से विकास कर रहे हैं लेकिन उसके साथ क्या हम पेड़ पौधे हवा पानी को सुरक्षित रखते हैं? क्या इस सब के प्रति हमारी जिम्मेदारी नहीं है? क्या थोड़ी सी समझदारी हमारी पृथ्वी को बचाने की नहीं कर सकते ? आए दिन आने वाली बाढ़, कुदरती आपदा ऐसे अचानक आने वाली परिस्थितियों के हम ही जिम्मेदार हैं, कम से कम हम देश या प्रकृति के लिए कुछ सुधार नहीं कर सकते तो नुकसान तो न करें.

अस्तु